प्रश्न :- रीतिकालीन कवि मतिराम पर एक टिप्पणी लिखें ?

उत्तर :- जीवन-वृत्त :-

मतिराम वीररस के प्रमुख कवि भूषण के भाई थे। ये तिकवांपुर (जिला कानपुर) में संवत 1674 के लगभग उत्पन्न हुए। मतिराम देव की भाँति कई आश्रयदाताओं के पास रहे, परन्तु उनका अधिकतर समय बूँदी के राजा भावसिंह के आश्रय में बीता।

रचनाएँ :-

इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं — 'ललित ललाम', 'छन्दसार', 'रसराज', 'साहित्य-सार', 'लक्षण श्रृंगार' तथा 'मतिराम सतसई'।

इनमें से 'ललित-ललाम', 'रसराज' तथा 'मतिराम सतसई' विशेष प्रसिद्ध है। 'मतिराम सतसई' 'बिहारी सतसई' के ढंग पर लिखी गई है और इसमें बिहारी के दोहों के समान ही सरस दोहे हैं। 'रसराज' में एक-से एक बढ़िया श्रृंगार के उदाहरण हैं। 'ललित-ललाम' अलंकार सम्बन्धी ग्रंथ है, इसमें अलंकारों के उदाहरण अत्यन्त सरस और स्पष्ट है।

मतिराम का रीतिकालीन कवियों में ऊँचा स्थान है, भावपक्ष और कलापक्ष दोनों दृष्टियों से इनका काव्य उत्तम बन पड़ा है। मतिराम की भाव-व्यंजना अत्यन्त स्वाभिक है। इसमें कृत्रिमता का सर्वथा अभाव है। बिहारी जहाँ 'विप्रलम्भ' के वर्णन में ऊहात्मक पद्धति का अनुसरण करने लगते हैं, वहाँ मतिराम में स्वाभाविकता दृष्टिगोचर होती है।

भावों के समान मतिराम की भाषा अत्यन्त स्पष्ट, सहज एवं स्वाभाविक है, सरसता एवं सुकुमारता भी उसमें विद्यमान है, कवित्त और सवैयों की भाषा नाद-सौन्दर्य लिए हुए हैं। आचार्य शुक्ल का कथन अत्यन्त सही है — "रीतिग्रन्थ लिखने वाले कवियों में इस प्रकार की स्वच्छ

Ajanta
Page No.
Date

3.

चलती और स्वाभाविक भाषा कम कवियों में मिलती है - रीतिकाल के प्रतिनिधि कवियों में पद्माकर को छोड़ और किसी कवि में मतिराम की-सी चलती भाषा और सरल व्यंजना नहीं मिलती।"

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न :- रीतिकालीन कवि मतिराम पर एक टिप्पणी या उनका जीवन-वृत्त पर प्रकाश डालें।

पता :-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (S.R.A.-AC) (B.R.A.B.U.)
मोबाइल - 7903046087
दिनांक - 07/02/2022